ई–बुलेटिन

कृषिउद्यमी

प्रतीयमान अनुभव को बांटने वाला मंच

खंड V अंक 12 मार्च 2014

प्रत्येक कृषक द्वारा बेहतर कृषि

इस अंक में:

- केरल में राज्य स्तरीय कार्यशाला
- महीने के कृषिउद्यमी श्री. रिशी राम पराशर
- महीने का संस्थान - एन.ए.एफ तमिलनाडु

कृषिउद्यमी की मुफ्त हेल्पलाइन का उपयोग करें

1800 -425-1556

" कृषि उद्यमिता एक ऐसा प्रतीयमान मंच है जहां कृषि उद्यमियों, बैंकरों, कृषि व्यवसाय कंपनियों, नोडल प्रशिक्षण संस्थानों, विस्तार कार्यकर्ताओं, शिक्षाशास्त्रियों, अनुसंधानकर्ताओं तथा कृषि व्यवसाय चिंतकों, जो देश में कृषि उद्यमिता विकास के लिए कार्य कर रहे हैं, के अनुभवों को सबके साथ बांटा जाता है।

तिरुवनंतपुरम, केरल में एग्री क्लीनिक एवं एग्री बिजनेस केन्द्र (एसी और एबीसी) की स्थापना के लिए केन्द्रीय सब्सिडी योजना पर राज्य स्तरीय कार्यशाला

केंद्रीय सब्सिडी योजना पर राज्य स्तरीय कार्यशाला उद्घाटन करते हुए नाबार्ड के मुख्य महाप्रबंधक श्री आर. अमालोर्पावनाथन।

तिरुवनंतपुरम में नाबार्ड के केरल पंजीकृत कार्यालय ने क्षेत्रीय कार्यालय के सभागार (ऑडीटोरियम) में 4 मार्च 2014 को एग्री क्लीनिक एवं एग्री बिजनेस केन्द्र की भारत सरकार की केन्द्रीय सब्सिडी योजना पर एक दिवसीय राज्य स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला का उद्घाटन नाबार्ड के मुख्य महाप्रबंधक, श्री आर. अमालोर्पावनाथन द्वारा किया गया। प्रतिभागियों में श्री वैंकटरमनय्या, सलाहकार, राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंधन संस्थान, डॉ. ए. शरिफ, एसी और एबीसी के लिए नोडल अधिकारी, केरल कृषि विश्वविद्यालय (KAU), लाइन विभागों के वरिष्ठ अधिकारी, सभी कमोडिटी बोर्डों के कमोडिटी बोर्ड और नियंत्रण कार्यालय, राज्य सहकारी बैंक, राज्य सहकारी कृषि और ग्रामीण विकास बैंक और कृषिउद्यमी शामिल थे।

श्री एन रमेश, जीएम, ने अपने स्वागत भाषण में बताया कि देश में योजना 2002 में शुरू की गयी थी और इस योजना से कई कृषिउद्यमी लाभान्वित हुए। केरल आरओ के मुख्य महाप्रबंधक श्री आर. अमालोर्पावनाथन ने अपने अध्यक्षीय भाषण में, केरल में एग्री क्लीनिक और कृषि व्यापार केन्द्रों की स्थापना के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने दोहराया कि उचित बजटीय समर्थन और उपयुक्त रणनीतियों के साथ केरल में उच्च तकनीक कृषि आगे बढ़ाने के लिए उपयुक्त नीतियों को विकसित करने के लिए काफी गुंजाइश है। कृषि डिप्लोमा धारकों को बढ़ावा दिया जाये ताकि उन्हें उद्यमिता कौशल के साथ ही तकनीकी कौशल में प्रशिक्षण देकर कृषि विस्तर सेक्टर के लिए पैसा और जुनून दोनों के लिए प्रेरित करे।

पेज-4 पर जारी.....

कृषिउद्यमी श्री. ऋषि राम पाराशर एक फार्मासिस्ट बने मधु-मक्खियां पालनहारी

कृषि स्नातक श्री ऋषि राम पाराशर, कुरुक्षेत्र, हरियाणा के बार्ना जिले के निवासी हैं। मधुमक्खी पालन में प्रवेश करने से पहले, वे 15 साल तक एक दवा कंपनी में विपणन कार्यकारी थे। विपणन कार्यकारी के रूप में अत्याधिक यात्रा ने उन्हें परिवार से उसे दूर रखा, जिसने उन्हें एक नए पेशे की खोज के लिए लिए उसे उत्साहित किया। 2007 में वे एसी और एबीसी योजना के अंतर्गत, भारतीय एग्रीबिजनेस प्रोफेशनल्स की सोसायटी (ISAP), करनाल, हरियाणा द्वारा आयोजित कृषिउद्यमिता विकास कार्यक्रम में शामिल हुए। वे स्क्रीनिंग परीक्षा के माध्यम से चुने गये और 2 महीने के एसी और एबीसी आवासीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में शामिल हो गये।

मधुमक्खी पित्ती के साथ श्री ऋषि पाराशर

प्रशिक्षण के दौरान उन्होंने करनाल में एक मधुमक्षिकालय का दौरा किया और गतिविधियों तथा मधुमक्षिकालय के कई लाभों से प्रभावित हुए। उन्होंने महसूस किया कि एक नए पेशे के लिए उनकी खोज समाप्त हो गयी और स्वयं को मधुमक्षिकालय की सभी तकनीकी जानकारी से अवगत कराया। प्रशिक्षण के बाद उन्होंने 10 लाख रुपये लागत की एक विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार की और करनाल में एम/एस पराशर मधुमक्खी खेत कंपनी की शुरूआत की। उन्होंने स्वयं 5 लाख रुपये की पूंजी निवेश की और शेष राशि के लिए ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स, ढांड जिला, हरियाणा में ऋण के लिए आवेदन किया। शुरुआत में उन्होंने 50 मधुमक्खी पित्ती खरीदकर अपने खेत में शहद उत्पादन इकाई और बिक्री केंद्र का गठन किया। उसी वर्ष उनका 5 लाख रुपये का बैक लोन मंजूर हुआ जिसने उन्हें 100 और मधुमक्खी पित्ती खरीदने के लिए प्रोत्साहित किया। पहले ही वर्ष के दौरान, उन्होंने 450 किग्रा शहद का उत्पादन किया, और 120 रुपये प्रतिकिलो की दर से कच्चे शहद की बिक्री की इस प्रकार खासा लाभ कमाया।

करनाल जिले में वर्ष 2011 में आई बाढ़ के कारण लगभग मधुमक्खी की 270 कालोनी क्षतिग्रस्त हो गईं। हालांकि, उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और वह एक चुनौतीपूर्ण तरीके से मधुमक्खी पालन जारी रखा। श्री पाराशर कहते हैं, “मधुमक्खी पालन मुख्य रूप से प्रति इकाई क्षेत्र फूल, जलवायु जैसे प्राकृतिक तत्वों और मधुमक्खी की अधिकता पर आधारित है। यह एक स्थानान्तरण व्यापार है।" इसलिए, विभिन्न राज्यों में फूल के मौसम को जानने के बाद उन्होंने एक जगह से दूसरी जगह मधुमक्खी पित्ती स्थापित किया। प्रति वर्ष दिसंबर में वे राजस्थान के कोटा में, मार्च में पंजाब के होशियारपुर में अगस्त में जम्मू-कश्मीर तथा अलीगढ़ में मधुमक्खी हाईब्स स्थापित करते हैं।

श्री पाराशर कहते हैं, "शहद, एक वास्तविक वस्तु है आसानी से संग्रहित किया जा सकता है और निकाले जाने के बाद तुरंत खराब भी नहीं होता है, इस प्रकार इसके परिवहन कोई परेशानी नहीं होती और इसे सहजता से बेचा जा सकता है।" औषधीय अनुभव से समृद्ध, वे शहद को अच्छे औषधीय मायने में स्वास्थ्य देखभाल के साथ मधुमक्षिकालय का मिश्रण करना चाहते हैं। उन्होंने स्वयं ही शहद से अल्सर और मधुमेह के इलाज में सकारात्मक परिणाम का अनुभव किया। इसलिए मानवता की भलाई के लिए मधुमक्खी फार्म पर चिकित्सा केंद्र शुरू करने और सेवाएं प्रदान करना की उनकी भावी योजनाए हैं। उन्होंने मधुमक्खी पराग, पौधा, शाही जेली, मधुमक्खी विष आदि उत्पादों के उत्पादन के लिए शहद प्रसंस्करण संयंत्र स्थापित करने के साथ ही साथ मोम का निर्माण, जिसे मोमबत्ती और साबुन उद्योगों में इस्तेमाल किया जाता है के उत्पादन की योजना भी बनाई।

एम/एस पराशर मधुमक्खी फर्म दिन पर दिन करनाल जिला में लोकप्रिय हो रही है। श्री पाराशर मधुमक्षिकालय पर प्रशिक्षण आयोजित करते हैं अपने साथी किसानों को मधुमक्खी रखने का उद्यम शुरू करने की शिक्षा देते है। उन्होंने अपने ही जिले में लगभग 50 किसानों को प्रशिक्षित किया और उन्हें छोटे स्तर पर मधुमक्खी पालन शुरू करने के लिए प्रेरित भी किया है। उन्होंने आठ पूर्णकालिक कुशल मजदूरों की भर्ती की है और फर्म का वार्षिक कारोबार रु.20/- लाख का है।

मधुमक्खी पालन पर अधिक वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त करने के लिए, करनाल एम/एस पराशर बी फार्म, एच. नं.1869, सेक्टर 7, यूई, पर संपर्क करें. मोबाइल No.94163 77,025 ईमेल आईडी:- Rishiparashar@gmail.com

कृषिउद्यमिता ग्रामीण स्थिरता की कुंजी है - राष्ट्रीय कृषि फाउंडेशन (एनएएफ), तमिलनाडु का मंत्र

"राष्ट्रीय कृषि फाउंडेशन (एनएएफ), (स्वर्गीय) श्री,. सी. सुब्रमण्यम, द्वारा ग्रामीण समुदाय के गरीब छोटे और सीमांत किसानों एवं उनके परिवारों की सहायता हेतु दूसरी हरित क्रांति के लिए विकास, सहयोग और कॉर्पोरेट मॉडल के समूह की एक संस्था के रूप में 2000 में स्थापित किया गया था। प्रथम हरित क्रांति में बीज से अनाज के बीज, वहीं दूसरी हरित क्रांति में "मिट्टी से बाजार" के उद्देश्य पर बल दिया गया है। व्यापक ग्रामीण विकास के माध्यम से खेती और ग्रामीण समुदाय का सशक्तिकरण एनएएफ का केंद्रीय विषय है।

महत्वपूर्ण उपलब्धि:

एनएएफ को एसी और एबीसी योजना को लागू करने के लिए नोडल प्रशिक्षण संस्थान के रूप में मैनेज द्वारा 2010 में मान्यता दी गई। स्थापना के बाद से, अब तक आठ बैचों के 204 कृषि उद्यमियों को प्रक्षिशित किया जा चुका है, जिसमें से 100 कृषिउद्यमियों ने अपने उद्यम स्थापित कर लिए हैं और शेष निकट भविष्य में ऐसा करने की स्थिति में हैं। संगठन के पास एक संपूर्ण प्रशिक्षण केंद्र है और एसी और एबीसी और बैंक लिंकेज सरलीकरण भूमिका के लिए अधिकारियों का एक समूह के लिए विशेष रूप से काम कर रहा है। अब तक मैनेज के पास, 98 सफलता की कहानियां आ चुकी हैं और समग्र सफलता दर 48% है (स्थापना के बाद से संचयी)।

एसी और एबीसी गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय कृषि फाउंडेशन (एनएएफ) की रणनीति:

- स्थानीय रेडियो स्टेशन और प्रिंट मीडिया के माध्यम से एसी और एबीसी प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए आवेदन आमंत्रित करने हेतु नियमित विज्ञापन, कृषि विश्वविद्यालयों के पूर्व छात्रों के साथ बैठकों का आयोजन, कैरियर परामर्श कार्यक्रमों की व्यवस्था।
- प्रशिक्षण के दौरान, एनएएफ द्वारा कृषि उद्यमिता के माध्यम से कृषि विकास की पहल के एक अभिन्न अंग के रूप में प्रशिक्षुओं को कृषि मूल्य श्रृंखला जैसे, मृदा परीक्षण, बाजार लिंकेज, सूक्ष्म वित्त और क्रेडिट सेवाओं, क्षेत्र सलाहकार सेवाएं आदि, को बदलने के लिए 'प्रमुख-किसान प्रमुख-गांव' की अवधारणा से परिचित कराना।
- सूक्ष्म बचत और स्थानीय पंचायत प्रशासन के सामने लाने के लिए स्थानीय स्तर पर स्थापित स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) और समुदाय आधारित संगठनों के साथ प्रशिक्षुओं की बैठक को सुगम बनाना।
- परियोजना की पूर्व मंजूरी के मूल्यांकन, ऋण प्रक्रिया और अन्य संबंधित विषयों पर प्रशिक्षुओं के मार्गदर्शन के लिए डीपीआर तैयारी पर, नाबार्ड, ग्रामीण विकास मंत्रालय, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, भारतीय स्टेट बैंक, इंडियन बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, इंडियन ओवरसीज बैंक, फर्स्ट डाटा वेस्टर्न यूनियन फाउंडेशन आदि, जैसी सरकारी प्रायोजित एजेंसियों के साथ हर प्रशिक्षण कोर्स में दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन।
- एनएएफ प्रशासन, वित्तीय साक्षरता, कृषि उद्यमिता आदि महिलाओं के स्वयं सहायता समूहों को प्रशिक्षण देता है। महिलाओं के विकास के लिए तमिलनाडु निगम (टीएनसीडीडब्ल्यू) ने महिला स्वयं सहायता समूहों के लिए इस तरह के प्रशिक्षण देने के लिए एनएफ को मान्यता दी है।
- पशुपालन के अपनी पहल के एक हिस्से के रूप में, एनएएफ डेयरी उद्यमों की स्थापना में पशु चिकित्सा स्नातकों के लिए तकनीकी सहायता प्रदान करता है। कृषिउद्यमियों के साथ सहयोग से एनएएफ ने लगभग 6500 उच्च उत्पाद वाले संकर पशुओं से दूध की पैदावार में 300% तक का सुधार हासिल किया।
- एनएएफ ने एसी और एबीसी डेटा तथा प्रकाशनों के संग्राहक के रूप में काम करने के लिए एक आईसीटी प्रयोगशाला की स्थापना की।

श्री.एस.वी. मुरुगन,
उपनिदेशक / नोडाल अधिकारी

अधिक जानकारी के लिए एनएएफ को संपर्क किया जा सकता है:

राष्ट्रीय कृषि फाउंडेशन, अनुसंधान एवं विकास केंद्र,
अन्ना विश्वविद्यालय तारामणि कैम्पस,
तारामणि रोड, तारामणि, चेन्नई -600 113,मोबाइल: 09445201063
फोन नं.: 044-2254283, 22542598,ईमेल : nationalagro@gmail.com

पृष्ठ एक का शेष.....

राज्य बागवानी मिशन के निदेशक डा. प्रतापन, रबर बोर्ड के अधिकारी डा. राजीवन और पशुपालन अधिकारी डा. सुनील ने उन क्षेत्रों पर प्रकाश डाला, जिन्हें कृषिउदमियों द्वारा लिया जा सकता है और उनके लिए प्रशिक्षण भी उपलब्ध है। इसके बाद मैनेज के सलाहकार श्री वेंकटरत्नमय्या, संस्थान की गतिविधियों के साथ ही देश में एसी और एबीसी उपक्रम के क्रियान्वयन की स्थिति प्रस्तुत किया। एसी और एबीसी नेडाल अधिकारी डॉ. ए.के. शेरिफ, ने केरल में एसी और एबीसी की प्रगति के साथ ही कृषिउद्यमियों को प्रदान किए गए प्रशिक्षण पर एक प्रस्तुति पेश की। उन्होंने कृषिउद्यमियों के मार्गदर्शक और साथ देने के लिए कृषिउद्यमियों के एक संघ के गठन पर प्रकाश डाला।

कृषिउद्यमियों ने स्थानीय अखबारों के माध्यम से इस योजना को लोकप्रिय बनाने जैसे कई सुझाव दिए। मैनेज ने कृषिउद्यमियों सहायता और प्रणाली को सक्रिय करने के लिए वरिष्ठ बैंक अधिकारियों के साथ बातचीत में एक अहम प्रभावी भूमिका निभाई। कृषिउद्यमियों से एक, श्री ओमेन, ने एसी और एबीसी योजना के तहत सभी कृषिउद्यमियों को पहचान पत्र जारी किया जाना का सुझाव दिया ताकि उन्हें सरकारी विभागों के साथ-साथ बैंकों के साथ बातचीत करते समय कुछ महत्व पाने में सक्षम बन सकें। इसके बाद, मुख्य महाप्रबंधक, नाबार्ड, ने सीपीएबीसी योजना के सफल कार्यान्वयन के लिए बैंकों, नाबार्ड और राज्य सरकारों के सक्रिय समर्थन की जरूरत पर जोर दिया। डेयरी उद्यमिता, पोल्ट्री वेंचर कैपिटल फंड, जैसे सरकारी प्रायोजित योजनाओं और श्री वी राजारमन, प्रबंधक, नाबार्ड, केरल आरओ द्वारा छोटे जुगाली करने एवं खरगोशों के लिए एकीकृत योजना पर अन्य प्रस्तुतियों भी थीं। र्यशाला का समापन श्रीमती प्रफुल्ल टी कुरियन, सहायक महाप्रबंधक, आईसीडी, नाबार्ड, केरल आरओ, तिरुवनंतपुरम के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ

स्व. डा. एन शशिधरन

शोक संदेश!

कृषिउद्यमी डा. (श्री) एन शशिधरन, पशु चिकित्सक (सेवानिवृत्त), वेल्लुनथारा, कोल्लम, केरल, का 1 मार्च 2014 को निधन हो गया। कृषक समुदाय के लिए गहन चिंता और प्रतिबद्धता वाले पेशेवर डॉ. शशिधरन, के परिजनों के साथ मैनेज परिवार अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

www.agriclinics.net वह पोर्टल है जो एसी तथा एबीसी योजना के बारे में सूचना प्रदान करता है। यह पोर्टल पात्रता मानदंडों, प्रशिक्षण संस्थानों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, सहायता कार्यों, वित्त विकल्पों तथा भावी उद्यमियों को सब्सिडी प्रदान करने के संबंध में अद्यतन जानकारी देता है।यह वेबसाइट स्थापित कृषि नव उद्यमों, लंबित परियोजनाओं, संबंधित योजनाओं के ब्यौरों से संबंधित सूचना तथा राज्य सरकारों, कृषि विश्वविद्यालयों, बैंकों, प्रशिक्षण संस्थानों तथा कृषि उद्यमियों के लिए उपयोगी अन्य सूचना भी प्रदान करती है।

एग्री क्लीनिकों तथा एग्रीबिजनेस केंद्रों के संबंध में अधिक स्पष्टीकरण के लिए कृपया इस पते पर मेल करें। indianagripreneur@manage.gov.in

"प्रत्येक कृषक द्वारा बेहतर कृषि"

"कृषिउद्यमी" श्री बी श्रीनिवास, आईएएस,
महानिदेशक, द्वारा प्रकाशित

हमसे संपर्क करें:

कृषि उद्यमिता विकास केन्द्र, (सीएडी)
कृषि विस्तार प्रबंधन के राष्ट्रीय संस्थान
(मैनेज), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद,पिन-500 030, भारत
ई मेल: indianagripreneur@manage.gov.in
वेबसाइट: www.agriclinics.net
हेल्पलाइन नं. : 1800 425 1556 (टोल फ्री)
ईमेल helplinecad@manage.gov.in

प्रमुख संपादक : श्री वी. श्रीनिवास, आईएएस

संपादक : डा. पी. चंद्रशेखर

सहायक संपादक : डा. लक्ष्मीमूर्ति

: सुश्री ज्योति सहारे